

गृह प्रवेश  
पारस्कर गृह्य सूत्रम्\*  
व  
महर्षि दयानन्द सरस्वती  
कृत  
संस्कार विधि  
से  
अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

**Griha Pravesh**

Prayers and Procedures for Entering a New Home

From Sanskaara Vidhi by Maharshi Dayaananda Sarasvatee

And

Paaraskara Grihya Sootram\*

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

\*पारस्कर गृह्य सूत्रम् के श्लोकों को पा.गृ.सू. से संदर्भित किया गया है

The shlokas from Paaraskara Grihya Sootram are identified with abbreviation Paara.

## गृह प्रवेश । griha pravesh (Entering a new home)

### तैयारी:

यदि सम्भव हो तो घर के बाहर पाँच ओ३म् की ध्वजाएं, पहली ध्वजा घर के मुख्य द्वार पर और बाकी एक एक चारों दिशाओं, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर में लगाएं। ऐसे ही घर के अन्दर पाँच हवन कुण्ड, एक मध्य में और शेष एक एक चारों दिशाओं में स्थापित करें। सम्भव न हो तो एक हवन कुण्ड से ही काम चलाएं। हवन के सभी समान के अतिरिक्त भोग के लिए हलवा व खीर भी बना लें।

### Preparation:

If possible, outside the home install 5 flag posts bearing OM flags, first at the main entrance of the house and remaining four, one in each of the directions. Similarly establish five havana kuṇḍas inside the home, one in the middle and one in each of the directions. In case five havana kuṇḍas are not possible, use only one havana kuṇḍa. Besides the utensils and items needed for havana, prepare halavaa and kheer as well.

पुरोहित के नेतृत्व में घर से बाहर आ कर ध्वजा स्तम्भ के मूल में निम्न मन्त्रों से जल सिञ्चन करें। ध्वजा न भी हो तो भी जल सिञ्चन करें। आधुनिक अपार्टमेंट वाले घरों में मुख्य द्वार पर जल सिञ्चन कर घर में प्रवेश करें और बाकी दिशाओं का जल सिञ्चन अन्दर से करें।

Under the guidance of a scholarly priest start sprinkling water at the base of the flag posts with following mantras. Even if flag posts can't be installed, sprinkle water regardless. In modern apartment/condominium homes, sprinkle water at the main door, then follow the procedures for entering the home and continue with sprinkling of water in four directions from inside.

**ओम् अच्युताय भौमाय स्वाहा।**

पा.गृ.सू. ३:४:३

(इस मंत्र से मुख्य द्वार पर)

(भौमाय) भूमि हमें (अच्युताय) स्थिर आधार प्रदान करे।

**om achyutaaya bhaumaaya svaahaa**

Paara. 3:4:3

(on the main flag post/ door)

**May the (achyutaaya) stable (bhaumaaya) earth continue to support us.**

**ओम् इमामुच्छ्रयामि भुवनस्य नाभिं वसोर्द्धारां प्रतरणीं वसूनाम् ।**

**इहैव ध्रुवां निमिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठतु घृतमुच्छ्रयमाणा ॥१॥** पा.गृ.सू. ३:४:४

(इस मंत्र से पूर्व दिशा में)

इमाम् उत् श्रयामि भुवनस्य नाभिम् वसोर्द्धाराम् प्रतरणीम् वसूनाम् ।

## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

इह इव ध्रुवाम् निमिनोमि शालाम् क्षेमे तिष्ठतु घृतम् उत् श्रयमाणा ॥

om imaam-uch-chhrayaami bhuvanasya naabhim vasorddhaaraam prataraneem  
vasoonaam ihaiva dhruvaan niminomi shaalaan ksheme tishthatu ghritam-uch-  
chhrayamaanaah Paara. 3:4:4 (on the eastern flag post/door/wall)

ओम् अश्वावती गोमती सूनृतावत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय।

आ त्वा शिशुराक्रन्दन् त्वा गावो धेनवो वाश्यमानाः ॥२॥

पा.गृ.सू. ३:४:४

(इस मंत्र से दक्षिण दिशा में)

अश्वावती गोमती सूनृतावती उत् श्रयस्व महते सौभगाय।

आ त्वा शिशुः आक्रन्दन् त्वा गावो धेनवो वाश्यमानाः ॥

om ashvaavatee gomatee soonritaavaty-uch-chhrayasva mahate saubhagaaya  
aa tvaa shishuraakrandan tvaa gaavo dhenavo vaashyamaanaah Paara. 3:4:4  
(on the southern flag post/door/wall)

ओं त्वा कुमारस्तरुण आ वत्सो जगदैः सह।

आ त्वा परिस्त्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरुप।

क्षेमस्य पत्नी बृहती सुवासा रयिं नो धेहि शुभगे सुवीर्यम्॥३॥

पा.गृ.सू. ३:४:४

(इस मंत्र से पश्चिम दिशा में)

त्वा कुमारः तरुण आ वत्सो जगदैः सह।

आ त्वा परिस्त्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरुप।

क्षेमस्य पत्नी बृहती सुवासा रयिम् नो धेहि शुभगे सुवीर्यम्॥

om tvaa kumaaras-taruṇa aa vatso jagadaiḥ saha aa tvaa paristrutaḥ kumbha aa  
dadhnaḥ kalashairupa kshemasya patnee bṛihatee suvaasaa rayin no dhehi  
shubhage suveeryam Paara. 3:4:4 (on the western flagpost/door/wall)

ओम् अश्वावद् गोमदूर्जस्वत् पर्णं वनस्पतेरिव।

अभि नः पूर्यताञ् रयिरिदमनुश्रेयो वसानः॥४॥

पा.गृ.सू. ३:४:४

(इस मंत्र से उत्तर दिशा में)

## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

अश्वावद् गोमद् ऊर्जस्वत् पर्णम् वनस्पतेरिव।

अभि नः पूर्यताम् रयिः इदम् अनुश्रेयो वसानः॥

**om ashvaavad gomad-oorjasvat parṇam vanaspateriva abhi naḥ pooryataam  
rayiridamanushreyo vasaanaḥ** Paara. 3:4:4 (on the northern flag post/door/wall)

पुरोहित या अन्य किसी बुजुर्ग से अनुमति माँगे। गृहस्थ बोले  
हे ब्रह्मन्! प्रविशामीति॥

पा.गृ.सू. ३:४:५

हे ब्रह्मन्! प्रविशामि इति॥

(हे) हे (ब्रह्मन्) पूज्य! क्या हम (इति) यहाँ (प्रविशामि) प्रवेश करें?

Seek the permission of the priest or any other elder present. Householder should say

**he brahman! Pravishaame-eti** Paara. 3:4:5

(he) O (brahman) Respected one! May we (Pravishaame) enter (eti) here?

वह पुरोहित या बुजुर्ग अनुमति देते हुए कहे

वरं भवान् प्रविशतु ॥

आप (वरं) श्रेष्ठता की ओर (भवान्) अग्रसर हो प्रसन्नतापूर्वक (प्रविशतु) प्रवेश करो।

Priest or the elderly person grants permission and says

**varam bhavaan pravishatu**

(bhavaan) With (varam) best thoughts and intentions happily (pravishatu) enter your home.

इसके उपरान्त ईश्वर को ध्यान में रखते हुए सपरिवार घर में प्रवेश करें।

ओम् ऋचं प्रपद्ये शिवं प्रपद्ये॥

पा.गृ.सू. ३:४:६

हम (ऋचं) सत्य (प्रपद्ये) की ओर जाते हैं, हम (शिवं) पवित्रता (प्रपद्ये) की ओर जाते हैं।

Now the householder along with the immediate family members, prayerfully enters the house.

**om ṛicham prapadye shivam prapadye**

Paara. 3:4:6

## गृह प्रवेश । griha pravesh (Entering a new home)

**We (prapadye) go towards (richam) the truth; we (prapadye) go towards (shivam) purity.**

इसके उपरान्त यज्ञ वेदी पर आसन ग्रहण कर पुरोहित के निर्देश अनुसार दैनिक प्रार्थना आदि करे जिसमें आचमन, अंगस्पर्श, ईश्वर स्तुति उपासना, स्वस्ति वाचन, शान्तिकरण, अग्नि का आहवान, समिधा धान, आधारावाज्यभाग आहुति, स्विष्टकृत आहुति, बृहद विशेष यज्ञ आदि प्रकरण हैं। फिर कुण्ड में निम्न आहुतियाँ दें। पाँच कुण्ड होने पर जिस दिशा की आहुति है उसी दिशा वाले कुण्ड में दें। एक कुण्ड ही होने की अवस्था में उसी दिशा में आहुति दें।

After entering the home, under the direction of the priest, the householder sits at the yajña vedee and performs the routine prayer and procedures like aachamana, aṅgasparsha, eeshvara stuti upaasanaa, svasti vaachana, shaantikaraṇa, start of havan and offerings up to bṛihad visheṣh yajña. After completion of the routine procedures following special offering are made in the holy fire. The offering meant for specific direction should be offered in the kuṇḍa in that direction. In case of only one kuṇḍa, make offering in the specific direction in that kuṇḍa itself.

**सभी दिशाओं में आहुतियाँ (घी की)**

**Offerings in all directions (ghee only)**

ओं प्राच्या' दिशः शाला'या नमो' महिम्ने स्वाहा' ॥१॥ (पूर्व दिशा में)

ओं देवेभ्यः' स्वाह्ये भ्यः स्वाहा'॥२॥ (पूर्व दिशा में)

om praachyaa dishaḥ shaalaayaa namo mahimne svaahaa (eastern direction)

om devebhyaḥ svaahyebhyaḥ svaahaa (eastern direction)

ओं दक्षिणाया दिशः शाला'या नमो' महिम्ने स्वाहा' ॥१॥ (दक्षिण दिशा में)

ओं देवेभ्यः' स्वाह्ये भ्यः स्वाहा'॥२॥ (दक्षिण दिशा में)

om dakṣhiṇaayaa dishaḥ shaalaayaa namo mahimne svaahaa (southern direction)

om devebhyaḥ svaahyebhyaḥ svaahaa (southern direction)

ओं प्रतीच्या' दिशः शाला'या नमो' महिम्ने स्वाहा' ॥१॥ (पश्चिम दिशा में)

ओं देवेभ्यः' स्वाह्ये भ्यः स्वाहा'॥२॥ (पश्चिम दिशा में)

## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

om prateechyaa dishah shaalaayaa namo mahimne svaahaa (western direction)

om devebhyah svaahyebhyah svaahaa (western direction)

ओं उदीच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा ॥१॥ (उत्तर दिशा में)

ओं देवेभ्यः स्वाह्ये भ्यः स्वाहा ॥२॥ (उत्तर दिशा में)

om udeechyaa dishah shaalaayaa namo mahimne svaahaa (northern direction)

om devebhyah svaahyebhyah svaahaa (northern direction)

ओं ध्रुवाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा ॥१॥ (नीचे की दिशा के लिए मध्य में)

ओं देवेभ्यः स्वाह्ये भ्यः स्वाहा ॥२॥ (नीचे की दिशा के लिए मध्य में)

om dhruvaayaa dishah shaalaayaa namo mahimne svaahaa

(in the middle for the lower direction)

om devebhyah svaahyebhyah svaahaa (in the middle for the lower direction)

ओम् ऊर्ध्वाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा ॥१॥ (ऊपर की दिशा के लिए मध्य में)

ओं देवेभ्यः स्वाह्ये भ्यः स्वाहा ॥२॥ (ऊपर की दिशा के लिए मध्य में)

om oordhvaayaa dishah shaalaayaa namo mahimne svaahaa

(in the middle for the upper direction)

om devebhyah svaahyebhyah svaahaa (in the middle for the upper direction)

ओं दिशोदिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा ॥१॥ (सभी दिशाओं के लिए मध्य में)

ओं देवेभ्यः स्वाह्ये भ्यः स्वाहा ॥२॥ (सभी दिशाओं के लिए मध्य में)

om dishodishah shaalaayaa namo mahimne svaahaa (in the middle for all directions)

om devebhyah svaahyebhyah svaahaa (in the middle for all directions)

## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

वास्तु आहुतियाँ (घी की)

Vaastu offerings (ghee only)

ओं वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।

यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥१॥ ऋग् ७:५४:१

वास्तो! पते प्रति जानीहि अस्मान् सुऽआवेशः अनमीवः भव नः ।

यत् त्वा ईमहे प्रति तत् नः जुषस्व शम् नः भव द्विपदे शम् चतुऽपदे ॥

हे (वास्तोः) गृह के (पते) रक्षक व स्वामी! आप हमारी (प्रति) प्रार्थना (जानीहि) जानिए कि

यहाँ रहते हुए (अस्मान्) हमारे (सुऽआवेशः) विचार शुद्ध रहें, (नः) हम (अनमीवः) निरोगी (भव)

रहें (यत्) और (त्वा ईमहे) आपके (प्रति) प्रति (जुषस्व) प्रसन्नतापूर्वक सेवा का भाव रखें।

(तत्) यह घर (द्विपदे) मनुष्यों और (चतुऽपदे) पशुओं के लिए (शम्) शुभकारी (भव) हो।

1. Om vaastosh-pate prati jaaneehy

asmaan-sv-aavesho anameevo bhavaa nah

yat-tv-emahe prati tan-no juṣhasva

shan no bhava dvi-pade shañ chatuṣh-pade svaahaa Rig 7:54:1

O (pate) Protector of this (vaastosh) home! Please (jaaneehy) know our (prati) prayers that while residing (yat) here, may (asmaan) our (aavesho) thoughts remain (sv) beneficial and pure; may (nah) we (bhavaa) remain (anameevo) free from any diseases; and may (no) we (emahe) maintain a (juṣhasva) happily serving attitude (prati) towards (tv) you and your creation. May (tan) this home provide refuge and (bhava) be (shan) blissful to (dvi-pade) humans and (chatuṣh-pade) animals as well.

ओं वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो।

अजरासस्ते सुख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व स्वाहा ॥२॥ ऋग् ७:५४:२

वास्तो! पते प्रतरणः नः एधि गयस्फानः गोभिः अश्वेभिः इन्दो इति।

अजरासः ते सुख्ये स्याम पिताऽइव पुत्रान् प्रति नः जुषस्व ॥

हे (इन्दो) आनन्द देने वाले (वास्तोः) गृह के (पते) रक्षक व स्वामी! आप (नः) हमें (प्रतरणः)

दुःख से तारने के लिए (गोभिः) गौ (अश्वेभिः) अश्वों आदि से (गयस्फानः) घर की समृद्धि

## गृह प्रवेश । griha pravesh (Entering a new home)

(ए॒धि) बढाईयें। (ते) आपकी (स॒ख्ये) मित्रता से हमारे (अ॒जरा॑सः) शरीर हृष्टपुष्ट (स्या॒म) रहें। आप (पि॒ताऽई॒व) पिता की (प्र॒ति) भांति (नः) हम (पु॒त्रान्) पुत्रों को (जु॒षस्व) सुख समृद्धि दिजिए।

2. Om vaastoṣh-pate pratarāṇo na edhi  
gayas-phaano gobhir-ashvebhir-indo  
ajaraasas-te sakhye syaama  
piteva putraan prati no juṣhasva svaahaa

Rig 7:54:2

O (indo) Blissful (pate) Protector of (vaastoṣh) this home! In order to (pratarāṇo) remove (na) our sorrows, (edhi) increase (gayas-phaano) the wealth of this home in the form of (gobhir) cows and (ashvebhir) horses etc. With (te) your (sakhye) friendship may our bodies always (syaama) be (ajaraasas) filled with vigor and vitality. (prati) Like (piteva) a father provide (no) us, your (putraan) children, (juṣhasva) happiness.

ओं वास्तोष्पते श॒ग्मया॑ संसदा॑ ते सक्षीमहि॑ र॒ण्वया॑ गा॒तुम॒त्या।

पा॒हि क्षेम॑ उ॒त योगे॑ वरं॑ नो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॑ सदा॑ नः॒ स्वाहा॑ ॥३॥ ऋग् ७:५४:३

वास्तोः प॒ते श॒ग्मया॑ संसदा॑ ते सक्षीमहि॑ र॒ण्वया॑ गा॒तुम॒त्या।

पा॒हि क्षेमे॑ उ॒त योगे॑ वरं॑ नः॒ यूयम् पा॑त स्व॒स्तिभिः॑ सदा॑ नः॒ ॥

हे (वास्तोः) गृह के (प॒ते) रक्षक व स्वामी! जिस स्थल पर (ते) आपका (श॒ग्मया॑) सुखरूप (र॒ण्वया॑) प्राकृतिक सौन्दर्य (संसदा॑) स्थिर हो वहाँ पर हम (गा॒तुम॒त्या) मधुर वाणी से आपका गुणगान करते हुए (सक्षीमहि॑) घर बनाए और प्रवेश करें। (उ॒त) और आप की (पा॒हि) रक्षा में (नः) हम (क्षेमे॑) कुशल पूर्वक (वरं॑) उत्तमता को (योगे॑) ग्रहण करें। (यू॒यम्) आप (स्व॒स्तिभिः॑) सुख आदि देते हुए (नः) हमारी (सदा॑) सदैव (पा॑त) रक्षा करो।

3. Om vaastoṣh-pate shagmayaa sansadaa te  
sakṣheemahi raṇvayaa gaatumatyaa  
paahi kṣhema uta yoge varan no  
yooyam paata svastibhiḥ sadaa naḥ svaahaa

Rig 7:54:3

O (pate) Protector of this (vaastoṣh) home! May we (sakṣheemahi) establish a home at a place which is (sansadaa) full of (te) your (shagmayaa) blissful



## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

(*raṇvayaa*) natural beauty and enter it while singing your praises in (*gaatumatyaa*) beautiful voices. (*uta*) And under your (*paahi*) protection (*kṣhema*) unharmed may (*no*) we (*yoge*) claim (*varan*) spiritual elevation. (*yooyam*) Please (*sadaa*) always (*paata*) protect (*naḥ*) us and grant us (*svastibhiḥ*) righteous happiness and pleasures.

ओम् अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् ।

सखा सुशेव एधि नः स्वाहा ॥४॥

ऋग् ७:५५:१

अमीवहा वास्तोः पते विश्वा रूपाणि आऽविशन् ।

सखा सुशेवः एधि नः ॥

हे (वास्तोः) गृह के (पते) रक्षक व स्वामी! जहाँ (विश्वा) सभी प्रकार के (रूपाणि) रूप (आऽविशन्) प्रवेश करते हैं वहाँ (नः) हमारे (अमीवहा) रोग दूर करने वाले (सखा) मित्र बनकर (सुशेवः) सुन्दर सुखों को (एधि) बढ़ाईयें ।

4. Om ameevahaa vaastoṣh-pate  
vishvaa roopaanyaavishan  
sakhaa susheva edhi naḥ

Rig 7:55:1

O (*pate*) Protector of this (*vaastoṣh*) home! At a place where (*vishvaa*) all kind of (*roopaanya*) beautiful bounties (*aavishan*) come and exist, there at our home be (*naḥ*) our (*sakhaa*) friend who (*ameevahaa*) removes sickness and (*edhi*) increases the (*susheva*) happiness.

स्थालीपाक आहुतियाँ (खीर की)

sthaaleepaka offerings (kheer or cooked rice)

ओम् अग्निमिन्द्रं बृहस्पतिं विश्वाँश्च देवानुपह्वये।

सरस्वतीञ्च वाजीञ्च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥१॥

पा.गृ.सू. ३:४:८

अग्निम् इन्द्रम् बृहस्पतिम् विश्वान् च देवान् उपह्वये।

सरस्वतीम् च वाजीम् च वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥

1. om agnimindram bṛhaspatim vishvaamshcha devaanupahvaye

sarasvateeñcha vaajeeñcha vaastu me datta vaajinaḥ svaahaa

Paara. 3:4:8

ओं सर्पदेवजनान्त्सर्वान् हिमवन्तं सुदर्शनम्।

वसूँश्च रुद्रानादित्यानीशानं जगदैः सह।

एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥२॥

पा.गृ.सू. ३:४:८

सर्पदेवजनान् सर्वान् हिमवन्तम् सुदर्शनम्।

वसून् च रुद्रान् आदित्यान् ईशानम् जगदैः सह।

एतान् सर्वान् प्रपद्येहम् वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥

2. om sarpadevajanaantsarvaan himavantam sudarshanam vasoonshcha  
rudraanaadityaaneeshaanañ jagadaiḥ saha etaantsarvaan prapadyeham  
vaastu me datta vaajinaḥ svaahaa

Paara. 3:4:8

ओं पूर्वाह्णमपराह्णं चोभौ मध्यन्दिना सह।

प्रदोषमर्धरात्रं च व्युष्टां देवीं महापथाम्।

एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥३॥

पा.गृ.सू. ३:४:८

पूर्वाह्णम् अपराह्णम् च उभौ मध्यन्दिना सह।

प्रदोषम् अर्धरात्रम् च व्युष्टाम् देवीम् महापथाम्।

एतान् सर्वान् प्रपद्येहम् वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥

3. om poorvaahṇamaparaahṇañ chobhau madhyandinaa saha pradoṣham-  
ardharaatrañ cha vyuṣṭāan deveem mahaapathaam etaantsarvaan  
prapadyeham vaastu me datta vaajinaḥ svaahaa

Paara. 3:4:8

ओं कर्तारञ्च विकर्तारं विश्वकर्माणमोषधींश्च वनस्पतीन्।

एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥४॥

पा.गृ.सू. ३:४:८

कर्तारम् च विकर्तारम् विश्वकर्माणम् ओषधीम् च वनस्पतीन्।

एतान् सर्वान् प्रपद्येहम् वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥

4. om kartaarañcha vikartaaram vishvakarmaaṇamoṣhadheeñshcha  
vanaspateen etaantsarvaan prapadyeham vaastu me datta vaajinaḥ  
svaahaa

Paara. 3:4:8

ओं धातारं च विधातारं निधीनां च पतिं सह।

एतान्त्सर्वान् प्रपद्येहं वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥५॥

पा.गृ.सू. ३:४:८

## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

धातारम् च विधातारम् निधीनाम् च पतिम् सहा  
एतान् सर्वान् प्रपद्येहम् वास्तु मे दत्त वाजिनः स्वाहा॥

5. om dhaataarañ cha vidhaataaran nidheenañ cha patiṃsaha

etaantsarvaan prapadyeham vaastu me datta vaajinaḥ svaahaa Paara. 3:4:8

ओं स्योनं शिवमिदं वास्तु दत्तं ब्रह्मप्रजापती ।

सर्वाश्च देवताश्च स्वाहा ॥६॥

पा.गृ.सू. ३:४:८

स्योनम् शिवम् इदम् वास्तु दत्तम् ब्रह्म प्रजापती ।

सर्वाः च देवताः च स्वाहा ॥

(इदम्) इस (वास्तु) घर में (ब्रह्म) रचियता (प्रजापती) पालक (च) और (शिवम्) दुःखनाशक  
का (स्योनम्) सुन्दर रक्षाकवच (सर्वाः) सभी (देवताः) देवताओं के रूप में (दत्तम्) दीजिए।

6. om syonaṃ shivamidam vaastu dattam brahmaprajaapatee sarvaashcha

devataashcha svaahaa

Paara. 3:4:8

### जल सिञ्चन

Jala siñchana (sprinkling water)

गृहस्थ चारों दिशाओं में द्वार या दिवार पर जल छिड़के।

Householder walks to doors/walls in all directions and sprinkles water.

ओं श्रीश्च त्वा यशश्च पूर्वे सन्धौ गोपायेताम् ॥१॥

पा.गृ.सू. ३:४:१०

(पूर्वी द्वार या दिवार पर)

om shreeshcha tvaa yashashcha poorve sandhau gopaayetaam

Paara. 3:4:10

(eastern door/wall)

ओं यज्ञश्च त्वा दक्षिणा च दक्षिणे सन्धौ गोपायेताम् ॥२॥

पा.गृ.सू. ३:४:११

(दक्षिणी द्वार या दिवार पर)

om yajñashcha tvaa dakṣhiṇaa cha dakṣhiṇe sandhau gopaayetaam Paara. 3:4:11

(southern door/wall)

ओम् अन्नञ्च त्वा ब्राह्मणश्च पश्चिमे सन्धौ गोपायेताम् ॥३॥

पा.गृ.सू. ३:४:१२

(पश्चिमी द्वार या दिवार पर)

## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

om annañcha tvaa braahmaṇashcha pashchime sandhau gopaayetaam

Paara. 3:4:12 (western door/wall)

ओम् ऊर्क् च त्वा सूनृता चोत्तरे सन्धौ गोपायेताम्॥४॥

पा.गृ.सू. ३:४:१३

(उत्तरी द्वार या दिवार पर)

om oork cha tvaa soonṛitaa chottare sandhau gopaayetaam

Paara. 3:4:13

(northern door/wall)

स्वतः परिक्रमा

Rotation in four directions

गृहस्थ अपने स्थान पर खड़ा होकर चारों दिशाओं की परिक्रमा करे और ईश्वर पर ध्यान केन्द्रित करे।

Householder stands at his places and rotates facing each direction while praying and focusing on God.

ओं केता च मा सुकेता च पुरस्ताद् गोपायेतामित्यग्निर्वै केताऽऽदित्यः सुकेता  
तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पुरस्ताद् गोपायेताम्॥१॥

पा.गृ.सू. ३:४:१४

(पूर्व दिशा की ओर)

केता च मा सुकेता च पुरस्ताद् गोपायेताम् इति अग्निः वै केता आदित्यः सुकेता तौ प्रपद्ये  
ताभ्याम् नमः अस्तु तौ मा पुरस्ताद् गोपायेताम्॥

1. om ketaa cha maa suketaa cha purastaad gopaayetaamityagnirvai  
ketaa'dityah suketaa tau prapadye taabhyaan namo'stu tau maa  
purastaad gopaayetaam

Paara. 3:4:14

(towards east)

ओं दक्षिणतो गोपायमानं च मा रक्षमाणा च दक्षिणतो गोपायेतामित्यहर्वै  
गोपायमानं रात्री रक्षमाणा ते प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु ते मा दक्षिणतो  
गोपायेताम्॥२॥

पा.गृ.सू. ३:४:१५

(दक्षिण दिशा की ओर)

दक्षिणतो गोपायमानम् च मा रक्षमाणा च दक्षिणतो गोपायेताम् इति अहर्वै गोपायमानम् रात्री  
रक्षमाणा ते प्रपद्ये ताभ्याम् नमः अस्तु ते मा दक्षिणतो गोपायेताम्॥

2. om dakṣhiṇato gopaayamaanañ cha maa rakṣhamaaṇaa cha dakṣhiṇato  
gopaayetaamityaharvai gopaayamaanaṃ raatree rakṣhamaaṇaa te

## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

**prapadye taabhyaan namo'stu te maa dakṣhiṇato gopaayetaam** Paara.  
3:4:15 (towards south)

ओं दीदिविश्च मा जागृविश्च पश्चाद् गोपायेतामित्यन्नं वै दीदिविः प्राणो  
जागृविस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मा पश्चाद् गोपायेताम्॥३॥ पा.गृ.सू. ३:४:१६

(पश्चिम दिशा की ओर)

दीदिविः च मा जागृविः च पश्चाद् गोपायेताम् इति अन्नम् वै दीदिविः प्राणो जागृविः तौ प्रपद्ये  
ताभ्याम् नमः अस्तु तौ मा पश्चाद् गोपायेताम्॥

**3. Om deedivishcha maa jaagrivishcha pashchaad gopaayetaamityannam vai  
deediviḥ praṇo jaagrivistau prapadye taabhyaan namo'stu tau maa  
pashchaad gopaayetaam** Paara. 3:4:16 (towards west)

ओम् अस्वप्नश्च माऽनवद्राणश्चोत्तरतो गोपायेतामिति चन्द्रमा वा अस्वप्नो  
वायुरनवद्राणस्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोऽस्तु तौ मोत्तरतो गोपायेताम्॥४॥ पा.गृ.सू.

३:४:१७

(उत्तर दिशा की ओर)

अस्वप्नः च मा अनवद्राणः च उत्तरतः गोपायेताम् इति चन्द्रमा वा अस्वप्नः वायुः अनवद्राणः  
तौ प्रपद्ये ताभ्याम् नमः अस्तु तौ मा उत्तरतः गोपायेताम्॥

**4. om asvapnashcha maa'navadraaṇashchottarato gopaayetaamiti  
chandramaa vaa asvapno vaayuranavadraaṇastau prapadye taabhyaan  
namo'stu tau mottarato gopaayetaam** Paara. 3:4:17 (towards north)

ओं धर्मस्थूणाराज ९ श्रीसूर्यामहोरात्रे द्वारफलके।

इन्द्रस्य गृहा वसुमन्तो वरूथिनस्तानहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिस्सह।

यन्मे किञ्चिदस्त्युपहूतः सर्वगणः सखा यः साधुसंमतस्तां त्वा शाले

अरिष्टवीरा गृहा नः सन्तु सर्वतः॥५॥ पा.गृ.सू. ३:४:१८

(पुनः पूर्व दिशा की ओर)

धर्मस्थूणाराजम् श्रीसूर्याम् अहोरात्रे द्वारफलके।

इन्द्रस्य गृहा वसुमन्तो वरूथिनस्तान् अहम् प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सह।

यत् मे किञ्चिदस्त्युपहूतः सर्वगणः सखा यः साधुसंमतस्ताम् त्वा शाले अरिष्टवीरा गृहा नः

सन्तु सर्वतः॥

## गृह प्रवेश । griha pravesha (Entering a new home)

5. om dharmasthooṇaaraajaṃ shreesooryaamahoraatre dvaaraphalake  
indrasya grihaa vasumanto varoothinastaanaham prapadye saha prajayaa  
pashubhissaha yanme kiñchidastyupahootaḥ sarvagaṇaḥ sakhaa yaḥ  
saadhusam matastaana tvaā shaale ariṣṭaveeraa grihaa naḥ santu  
sarvataḥ Paara. 3:4:18 (again towards east)

### आशीर्वचन

#### Blessings of the congregation

सभी उपस्थित जन गृहस्थ पर पुष्प वर्षा कर उनको आशीर्वाद दें।

Everyone present showers their blessings along with flowers on the Householder.

सर्वे भवन्तोऽत्राऽऽनन्दिताः सदा भूयासुः ॥

सर्वे भवन्तः अत्रा आनन्दिताः सदा भूयासुः ॥

sarve bhavanto'traa''nanditaah sadaa bhooyaasuh

इसके उपरान्त हवन को दैनिक कर्म के अनुसार पूर्ण करें।

Now complete the havana as per the daily routine procedures.